भगवत कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 28 अंक : 1 | 15.1.2005 शनिवार (जनवरी-फरवरी) | प्रति अंक : 10.00

3 फरवरी....1952, 'विजय दिन' कहलाया !

तुम तुम्हारा सच्चा और मजबूत संगठन खड़ा करो। विश्वास रख कर आलस छोड़ दो। वहमों को फेंक दो। डर छोड़ो, कुसंग का त्याग करो, कायरता को झाड़ दो। हिम्मत रखो, बहादुर बनो, आत्मविश्वास रखना सीखो। इतना करोगे तो तुम जो चाहोगे वह अपने आप ही मिल जाएगा। जगत में जो जिसके लायक है, वह उसे मिलता ही है।

– सरदार वल्लभभाई पटेल

लोह पुरुष सरदार पटेल के उपरोक्त शब्द हमें प.पू. काकाजी की बलभरी वाणी व दिव्य स्मृतियों में सहज ही खींच ले जाते हैं। हाँ, प.पू. काकाजी इसी के साथ जरुर कहते कि– ***राजा ! हमें तो 'प्रगट प्रभु' मिले हैं। 'प्रभु' यानि ? पल में चाहे सो करें। उनके बल से अशक्य काम भी शक्य कर पाएंगे।***

लौकिक दृष्टि से देखें तो सरदार पटेल की जीवनशैली– कार्यपद्धति प.पू. काकाजी से काफी मिलती-जुलती है।

स्वतंत्र भारत के निर्माता की त्रिपुटी में राष्ट्रपिता गाँधीजी और पंडित जवाहरलाल नेहरू के साथ सरदार पटेल की भी गणना होती है। इस महापुरुष को याद करते ही उनके द्वारा किए गए विविध अद्‌भुत कार्यों की झांकी आँखों के सामने सहज ही खड़ी हो जाती है। स्वतंत्रता के बाद एक अखंड एवं सुदृढ़ भारत निर्माण करने में सरदार की राजनीतिक चतुराई और सूझ अजोड़ व बेमिसाल है। कहा जाता है कि सरदार का दिल पुष्प जैसा कोमल होते हुए भी, अखंड भारत के शिल्पी के रूप में एक लोह पुरुष के रूप में उनकी पहचान को कोई भुला नहीं पाएगा। राजकीय क्षेत्र में जिस तरह सरदार पटेल भारत के इतिहास में अमर हो गए... ठीक उसी तरह– गुणातीत समाज के निर्माता की त्रिपुटी में प.पू. पप्पाजी और प.पू. बा के सहयोग से आध्यात्मिक क्षेत्र में प.पू. काकाजी महाराज द्वारा करी नवक्रांति कभी भुलाई नहीं जा सकेगी और... ना ही किसी भी कीमत पर वह भूलनी चाहिए, वर्ना हम 'कृतघ्नी' गिने जाएंगे। आज हम जो अक्षरधाम का सुख भोग रहे हैं उसकी नींव में तो वे ही समाए हैं। उन्होंने प्रगट प्रभु और उनके संबंध वालों की महिमा को जीव में उतारी और संबंध में आए हुए को भी वह दृढ़ करवाई। और... गुणातीत समाज की भावात्मक एकता के लिए आख़िरकार स्वयं को याहोम कर दिया !

'स्वामी की बातों' में लिखा है कि–

'बीजा तो अभागिया पण यादव तो निरंतर अभागिया...'

यानि– दूसरे तो 'अभागे', क्योंकि उन्हें श्री कृष्ण का परिचय-संबंध नहीं था, सो पहचान नहीं हो पाई। पर, यादव कुल तो **'निरंतर अभागा'** ही कहा जाए, क्योंकि भगवान कृष्ण यादव कुल में जन्में, उन्हें अपना 'संबंध' देकर दिव्य शक्ति के कई-कितने अनुभव भी कराए; फिर भी यादव कुल में–जो उनकी बिरादरी कही जाए– वहाँ किसी ने भी उन्हें पहचाना नहीं और अंत में विनाश को पाया...

प.पू. काकाजी ने अपमान-आक्षेप-गालियाँ सहन कर-करके गुणातीत समाज का -एक दिव्य समाज का सर्जन किया- उसकी परवरिश करी। भले हम उनके हुए या नहीं, लेकिन हमारे लिए-हमारे ही होकर वे हमारे बीच रहे। और... हम ? समझते हुए जानबूझ कर उनकी बातों को हमने ही नज़रअंदाज करा... इतना ही नहीं, अपनी छुपी

महत्वाकांक्षाओं- वृत्तियों-अहं को पोसने हमारे लिए उनके किए एहसानों को भुलाने की—अरे ! उन्हें गुणातीत परंपरा से ड्रॉप करने की घिनौनी हरकत भी आज कर रहे हैं। हम जरुर सोचें कि स्वामी की वह बात कहीं हमारे लिए तो नहीं दोहराई जाएगी ? भूले नहीं कि नुकसान-हानि तो हमें ही है !

खूब गहराई से सोचेंगे तो ख्याल आएगा कि निजी प्रसिद्धी पाने की तो प.पू. काकाजी को कोई महत्वाकांक्षा-चाहना कभी नहीं थी। उन्हें अपनी प्रसिद्धी की तनिक भी परवाह होती, तो आज से **25 साल** पहले जब वे हमें जो 'प्राणायाम-प्राणोत्थान' करने का अभ्यास कराते थे, उसी को ज़ाहिर में प्रदर्शित करके कई योगाचार्यों की भाँति वे **'अंतर्राष्ट्रीय अध्यात्म महायोगी'** की प्रसिद्धी पा सकते थे। पर, **अंतिम समय तक वे सिर्फ हमारे लिए ही जिए... उन्होंने तो जोगी के संबंध वालों की परवरिश करने में अपने रोम-रोम की आहुति दे देने का दृढ़ संकल्प जो कर लिया था।** और आज... हम वही 'प्राणायाम-प्राणोत्थान' सीखने के लिए इधर-उधर भाग रहे हैं ना !!!

दरअसल वे हमारे लेवल-हमारी कक्षा पर उतर कर अंतिम सांस तक जिए और खूब सस्ते बने... पर, अपने संकुचित व सीमित सोच के दायरों में रहते हुए **हमने उस चिदाकाशी विभूति को अंडरएस्टिमेट ही किया।**

अब प.पू. काकाजी के स्थूल शरीर छोड़ने के बाद प.पू. साहेब ने कहा था कि 'प.पू. काकाजी के लिखे लेटर्स उस समय तो समझ नहीं आता था, सो हम फाईल कर देते थे।' आज 25 साल के बाद वो लेटर्स का एक-एक शब्द पढ़ते हैं और थोड़ा-थोड़ा समझ आता है, तो लगता है कि ओहो ! वे हमें क्या देना चाहते थे... और हम ?

शत्-शत् प्रणाम गुरुहरि योगीजी महाराज को कि उन्होंने प.पू. काकाजी महाराज के रूप में 'साक्षात्कार' को पाई दिव्य विभूति की हमें अनमोल भेंट दी। उनके साक्षात्कार के 53 वर्ष पूरे हो रहे हैं... हमने उनकी महिमा मुख से खूब गाई, लेखनी से भी लिखी... पर अब समय का तकाज़ा है कि उनके द्वारा समय-समय पर दी गई सूझ-ज्ञान की उस राह पर हम अग्रसर हों !

1966 में संस्था के विमुख प्रकरण के पश्चात् 'श्री अक्षरपुरुषोत्तम सत्संग पत्रिका' में **प.पू. काकाजी** स्वयं **'अनामी'** के नाम से प.पू. गुरुजी को 'सद्विचार' लिखवाते थे। आइए, 1970 में प.पू. काकाजी महाराज द्वारा दिया गया संदेश को पढ़ें और उसके एक-एक शब्द की गहराई को समझ कर अपने जीवन में अमल करें...

गीता में 'ज्ञानी' को भगवान ने स्वयं की आत्मा कहा है।
महाराज ने भी वचनामृत में अक्लमंद की प्रशंसा करी है।
लेकिन वह **अक्लमंद** कौन ? **जिसे सत्य और असत्य का विवेक हो वह।**
गुरुहरि प.पू. योगीजी महाराज ने केवल करुणा करके उनके बल से हम में एक बार तो सत्य की स्थापना कर दी है—**धाम, धामी और मुक्तों** को **सत्य** मनवा दिया।
परंतु हमारी जड़ता के कारण कहो या लौकिक बुद्धि से सत्य-असत्य के मूल्यांकन करने की आदत के कारण कहो—चाहे जो कुछ भी कहें—
परंतु उन्होंने जिस असत्य को हम में से खदेड़ा,
उसका लगन से त्याग करने की बजाय
हमारे तंत्र का ही एक भाग उस मायिक तत्त्व का स्वीकार करता रहता है
या फिर
उसका पूरा बहिष्कार करने हम राजी—रज़ामंद नहीं होते।
इससे उन अनिष्ट तत्त्वों का हमला होने का मार्ग हमेशा के लिए खुल्ला रहता है।
इसका मूल कारण इतना ही हो सकता है कि हमारा समर्पण सच्चा और संपूर्ण नहीं होगा।
हमारे चित्ततंत्र का एक भाग तो हम भगवत्स्वरुप संत को समर्पित कर देते हैं,
परंतु उसका दूसरा भाग अज्ञान के पर्दे में अपने आपको छिपा कर अपने ढंग से चलने की कोशिश करता रहता है
या
निजी अहंप्रधान शर्तों की आड़ में

किए हुए समर्पण के पीछे रही कामना, अहंताभरी माँगें
और
वृत्तियों को पोसती इच्छाएं पूरी करने के हमारे दुराग्रह को ढकता रहता है।
परंतु,
सत्य और असत्य, प्रकाश और अंधकार, समर्पण और स्वार्थ–
ये दोनों भगवान को अर्पण हुए हमारे तंत्र में एक साथ तो कभी रह सकेंगे ही नहीं।
अंतरमंदिर में भगवान के स्वरूप की मूर्ति हाज़राहजूर पधरानी हो,
तो उस मंदिर को स्वच्छ और पवित्र रखना ही पड़ेगा।
दिल की सच्चाई से परिपूर्ण समर्पण करेंगे, उसके बाद ही बाकी का सब हमारे लिए संत कर लेंगे।
सो ही सद्. मुक्तानंदस्वामिजी ने कहा है कि–
'मस्तक धड़ामां जे जन मेलशे ते घट प्रेमप्रवाह पामे।'
समर्पण भी संत ही हमारे लिए करेंगे यह मानना गलत है।
हाँ, समर्पण की माँग संत हमारे पास जरुर करते हैं
और
उसके लिए हम में ज्ञानांश का वैराग्य उदय करने के प्रसंग भी वो खड़े करते ही रहते हैं !
परंतु समर्पण करने के लिए जोर–जबरदस्ती वे कभी भी नहीं करते।
हमारा समर्पण स्वतंत्र रूप से-हमारी स्वेच्छा से-अहोहोभाव से हमने अपने आप करा हुआ होना चाहिए।
चैतन्यरूप मानव का वह समझदारीपूर्वक का सच्चे दिल से समर्पण होना चाहिए।
और...
संत हमें जो देना चाहते हैं, उसकी बराबरी में हमारे समर्पण की तो कोई औकात ही नहीं है।
धूल के मोल संत हमें सोना दे रहे हैं।
लेकिन 'प्रत्यक्ष' की महिमा समझने की ही हमारी खोट है...
वह क्या ? तो–
राजा का कुंवर मूली के लिए रोए ऐसा है !
लेकिन अब अति सयानेपन में, भोलेपन में या बचपने में 'मूरख न ठहरें–रह न जाएं-राजी कर लें'–यही अभ्यर्थना !
शुभ विचारक की परम सत्यनिष्ठा की अखंडित सहजानंद रूप में यही अंतिम फलश्रुति है।

हमारा यह खूब सौभाग्य है कि प.पू. काकाजी द्वारा लिखवाए सोने की मोहरों का खज़ाना पुरानी पत्रिकाओं के रूप में हमारे पास संग्रहित है। जैसे-जैसे वो पढ़ते हैं, तो मन सहज ही एक विचार को पाने मजबूर हो ही जाता है कि ओहो वे कैसे पुरुष जो हमें धूल के मोल सोना देना चाहते थे और हमने कीड़े की भाँति मन की गंदी गटर में ही आनंद माना... अपने ही राग-द्वेष के दायरे में लिपटे रहे...

फिर भी हमें सजग रखने समय-समय पर प.पू. काकाजी इस प्रकार प्रकाश फैंकते ही रहे-फैंकते रहे ! भगवान को **'प्रगट'** तो हम मानते हैं, लेकिन जब तक **'प्रत्यक्ष'** नहीं मानेंगे , तब तक मानसिक और बौद्धिक मूल्यांकन रहेगा और हमारे तर्क-वितर्क टलेंगे नहीं और जीव में शांति व आनंद प्रगट होगा नहीं।

सो, अंतरात्मा में भगवान का ऐसा आविर्भाव करने के लिए परम साधन रूप में प.पू. काकाजी ने **'स्वरूपयोग'** का रहस्य समझा कर उसकी करामात-पद्धति सिखाई थी... अगर हम दिल की सच्चाई से अपनी गलती को मानेंगे, तो भीतर से एक आवाज़ जरुर आएगी कि प.पू. काकाजी ने तो अपनी ओर से देने में कोई कसर नहीं छोड़ी, पर हम बेपरवाह रहे... फिर भी हमारे प्रति उनकी कैसी अनहद् प्रीति कि जैसे जगत में बच्चे भले अपने पिता के परिश्रम को समझने तैयार ही ना हों, फिर भी पिता अपने बच्चों की नादानियों को नज़रअंदाज करके बच्चों के भविष्य के लिए पूँजी जमा करा रखता है; ठीक वैसे ही प.पू. काकाजी ऐसे लेखों के ज़रिये हमारे लिए उनकी भावना को रख कर गए...

फरवरी मास में तो मानो प्रार्थना करने के पर्वों की श्रृंखला ही बन गई है। **13 फरवरी, वसंतपंचमी** यानि– **शिक्षापत्री जयंती**... श्रीजी महाराज ने शिक्षापत्री को सर्वदेशीय बना कर सभी संप्रदायों के सनातन सिद्धांतों को उसमें समाया है। परब्रह्म की उपासना की सर्वोपरि रीत समझा कर युगों-युगों के लिए जीवमात्र का अर्चिमार्ग खूब आसान बना दिया। करीब 220 साल के बाद भी आध्यात्मिक व नैतिक मूल्यों का समावेश करी हुई यह आज बेजोड़ है.... आज भी अगर कोई 'शिक्षापत्री' के मूलभूत सिद्धांतों को लेकर चलें तो किसी भी क्षेत्र में उसे दुःख स्पर्श नहीं कर सकता।

दूसरा, **वसंतपंचमी** यानि– **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज का प्रागट्य दिन** !

अक्षरपुरुषोत्तम की–आदि-अनादि के मूलभूत तत्त्वों की सनातन युगल उपासना को ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज और ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज ने श्री अक्षरपुरुषोत्तम के मंदिरों में मूर्त करी। गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज का एक ही अभिप्राय था कि अक्षरपुरुषोत्तम की निष्ठा ब्रह्मांड में प्रवर्ताएं... जब तक सूरज-चाँद रहेगा, ये दोनों दिव्य विभूतियाँ **'अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना के आद्य संस्थापक'** के रूप में धरती पर 'यावचन्द्रदिवाकरौ' याद रहेंगी...

सत्संग के प्रचंड प्रवाहों-आँधियों के विरोध के सामने वे अडिग ही रहे। सच, इन दिव्य पुरुषों ने हमारे लिए राजमार्ग प्रशस्त करने दिन-रात देखे बिना जो अविरत परिश्रम किया, वो ऋण तो हम कभी भी चुका नहीं पाएंगे.... हाँ, उनके द्वारा दिए गए ब्रह्मसूत्रों, सिद्धांतों और उन्होंने स्वयं जीकर हमारे लिए जो आदर्श रखे वही नज़र समक्ष रख कर जीवन का आधार बना लें... ये दिव्य विभूतियाँ कैसा जीवन जी गई, उस ओर हमारी नज़र सतत् रहे...

गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने सत्संगी के पक्ष और कुटुंबभाव रखने मात्र में कल्याण का मार्ग सुगम बताया था। उन्हें कुटुंबभाव यानि– भक्तों में आपस में आत्मीयभाव खूब पसंद था। अपने संबंधीजनों के प्रति जैसी आत्मीयता सहज रहती है, वैसी ही संतों व हरिभक्तों के प्रति यदि कोई रखता तो वे खूब राजी होते। **प.पू. काकाजी** ने गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के अंतर के इस अभिप्राय को खूब नज़दीक से निहारा और स्वयं ऐसा जीकर नई शुरुआत करके जीवनभर इसी अभिप्राय के लिए जिए। आज प.पू. गुरुजी भी प.पू. काकाजी के उसी सिद्धांत को लेकर यहाँ हर एक मुक्त के जीव में इसे पिरोने तत्पर हैं। तो, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के प्रागट्य दिन पर इस राह पर अग्रसर होने-गुणातीत स्वरूपों के अभिप्राय की भक्ति में जुड़ने दृढ़ संकल्प करें।

वसंतपंचमी के बाद **15 फरवरी** यानि **परम पूज्य अक्षरविहारीस्वामिजी की जयंती**.... गुरुहरि प.पू. पप्पाजी के घर में महामुक्त के रूप में जिन्होंने जन्म धरा... गुरुहरि योगीजी महाराज का वचन मान कर साधु के रास्ते यानि ब्रह्मविद्या के मार्ग पर चले और बापा के अंतर की प्रसन्नता पाई। अपनी प्रसन्नता रूप उन्हें शुभाशीष देते हुए बापा ने कहा था कि तुम **'अनादि के हो'** और **'प्रभुप्रेरणा से अब काम करो'**... यूं कह कर उन्हें अक्षरधाम की चाबी दे दी और तीर्थ स्थान सांकरदा में रह कर संबंध में आए अनेकों को ब्रह्मविद्या सिद्ध कराने का वे अविरत उद्यम कर रहे हैं। गुरुहरि योगीजी महाराज ने नाम भी कैसा अद्भुत दिया... **'अक्षरविहारी'** यानि अक्षर में– गुणातीत में ही जिसका मन अखंड विहार करता रहे और... सच ! गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रति भक्ति अदा करने वे लीन हैं। सो, उनके प्रागट्य दिन पर उनके श्रीचरणों में प्रार्थना कि आपकी तरह केवल 'अक्षर' में अखंड निमग्न रह कर साधुता के कल्याणकारी गुण प्राप्त करके प्रत्यक्ष स्वरूपों को राजी कर लें...

और... **7 मार्च** को **प.पू. काकाजी का स्वधामगमन दिन** ! अबकी बार यह अंग्रेजी तारीख व हिन्दी तिथि से एक ही दिन हैं। हम सब के लिए अंतर्दृष्टि करके अपने प्यारे प्रभु प.पू. काकाजी के पास दिल की सच्चाई से प्रार्थना करने का दिन-अपने स्वभावों को तिलांजली देने का दिन...

सच, दुनिया में देखने जैसे तो सिर्फ भगवान व भगवान रखे पवित्र निर्मल संत ही हैं... बाकी कहीं और माल ही ना माना जाए। जैसे अर्जुन की दृष्टि केवल मछली की आँख की ओर थी, उसी प्रकार हमारी नज़र सिर्फ ध्येय स्वरूप संत पर ही केन्द्रित रखें। मेरा-तेरा, अपना-पराया, दूसरों की टीका-चर्चाओं में पड़े बिना नए वर्ष की मंगल प्रभात में-**नया सूरज** प्रगटाएं... यही **3 फरवरी, 13 फरवरी-वसंतपंचमी, 15 फरवरी और 7 मार्च** के पावनकारी दिनों पर अंतर की प्रार्थना !

✡✡✡

श्रवण, मनन, निदिध्यासन

आप सब इस बात से भली भाँति परिचित हैं कि दिल्ली– अशोकविहार 'स्वामिनारायण मंदिर' में हर साल मई-जून में एक महीने का **'अनुष्ठान शिविर'** आयोजित करते हैं। **उस दौरान प.पू. काकाजी की परावाणी का एक-एक सेन्टेन्स प.पू. गुरुजी हमें समझाते हैं। इस ध्वनिमुद्रण के मुद्दे 'श्रवण मनन निदिध्यासन' के अंतर्गत हम** भगवत् कृपा द्वारा **आपको पहुँचाते हैं।**

अबकी बार **जनवरी-फरवरी की 'भगवत् कृपा'** अंक के लिए हम तो क्रम से ही ध्वनिमुद्रण के ज़रिये 'श्रवण मनन निदिध्यासन' के लिए मुद्दे निकालने बैठे थे। पर, तब मन में कुछ ऐसा आया कि प.पू. काकाजी महाराज यदि स्थूल रूप से हाज़िर होते तो कुछ बातें करके हमें जरुर टकोर करते-निर्देश देते कि **3 फरवरी** मना रहे हो, तो अब इतना तो कम से कम करने लग पड़ो ! और... आश्चर्यकारक घटना यह बनी कि ध्वनिमुद्रित वह कैसेट की पूरी 'बी' साईड में सिर्फ प.पू. काकाजी के आशीर्वाद रूप परावाणी ही सुनाई पड़ी और... **उस दिन प.पू. गुरुजी ने तो बीच में समझाने के लिए एक भी सेन्टेन्स बोला ही नहीं !** इस जेस्चर से ऐसा ही लगा मानो जैसे हमारे मन में आया था–प.पू. काकाजी स्वयं साक्षात् प्रगट होकर हमें **3 फरवरी** निमित्त मार्मिक टकोर-निर्देश दे रहे हों कि अब तो जाग्रत बनो और गुरुजी मौन ही रहे !

यह हम सभी का अनुभव है कि प.पू. काकाजी ने सिर्फ स्थूल देह ही छोड़ा है। 'सहजानंद' की वह पारमेश्वरी चेतना तो हमारे चैतन्य के विकास के लिए अभी भी हम सब के बीच अखंड विद्यमान है और हमारी हर प्रकार से निरंतर परवरिश कर रही है। सो, जो-जो भी प.पू. काकाजी के अल्प संबंध में भी आया है, वे **इधर-उधर भटके बिना** खूब निश्चिंत रहे, क्योंकि प.पू. काकाजी हम सब के साथ जैसे पहले थे, वैसे अब भी हैं ही और हमेशा रहेंगे।

उत्तरभारत-हरियाणा-पंजाब की भूमि पर 'स्वामिनारायण' सत्संग के बीज प.पू. काकाजी ने डाले हैं। सो, प.पू. काकाजी की परावाणी की जिस कैसेट का उपरोक्त जिक्र किया गया है, वह **1979–कुरुक्षेत्र** में प. पू. काकाजी और पू. कांतिकाका के सान्निध्य में आयोजित तीन दिन की **'सहृदयी शिविर'** की है। इस शिविर में पंजाब से सवद्दी-जगरांव के नए-नए भक्त प.पू. काकाजी के दर्शन, सेवा, समागम का लाभ लेने कुरुक्षेत्र आए थे। यूं इस 'सहृदयी शिविर' के साथ पुराने जोगियों की अनेक स्मृतियाँ जुड़ी हैं।

प्रभु की शक्ति का एक अद्‌भुत अनुभव कराने ही प.पू. काकाजी ने यह शिविर का आयोजन किया था। शिविर से पन्द्रह दिन पहले ही प.पू. काकाजी का पत्र आया कि इस 'सहृदयी शिविर' में कई चमत्कारी घटनाएं बनेंगी, जिससे भगवान व संत की शक्ति का सबको अनोखा अनुभव होगा और... सच में ऐसा बना भी।

पंजाब से कॉन्टेक्ट में आए एक नए बहनजी खूब निराशा की क्षणों से गुज़र रहे थे। उन्हें बस एक ही धुन लगी थी कि मुझे पानी में डूब कर मर जाना है। उनके इन्हीं विचारों को देख कर उनके पति उन्हें शिविर में प.पू. काकाजी के पास कुरुक्षेत्र ले आए थे। शिविर के दूसरे दिन ही वो बहनजी सुबह जल्दी उठ कर अकेली 'ब्रह्मसरोवर' के गहरे पानी के पास पहुँच गईं। प्रभु प्रेरणा से सत्संगियों में से ही कोई उसी समय ब्रह्मसरोवर के दर्शन करने गया, तो उन बहनजी को सरोवर किनारे पर बेहोश पड़े देखा... दो-तीन जनों की मदद ली और उन्हें वापिस 'गीता भवन' धर्मशाला में ले आए। प.पू. काकाजी ने उन बहनजी के मुँह पर प्रसादी का जल छिड़का तो वे होश में आईं। फिर प.पू. काकाजी ने उन्हें खूब समझाया, लेकिन वो बहनजी एक ही बात बोलती रहीं कि मुझे पानी के पास ही मर जाना है। आख़िर प.पू. काकाजी बोले कि अच्छा ! आज से बराबर एक महीने बाद तुम्हें ले जाएंगे। पर, तब तक 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' भजन करना और ठीक एक महीने बाद खबर मिली कि उन बहनजी ने अपने गाँव की झील के पास ही शरीर छोड़ा। इस प्रसंग से उनके परिवारजनों को प.पू. काकाजी के प्रति दृढ़ निष्ठा तो हुई ही, साथ ही भीतर में एक तसल्ली भी हुई कि उनकी माँ प.पू. काकाजी जैसे प्रभुधारक संत के वचन से अकाल मृत्यु को नहीं, बल्कि सद्‌गति को पाई हैं। प.पू. काकाजी के स्थूल शरीर छोड़ने के बाद भी उन बहनजी का पूरा परिवार प.पू. गुरुजी के प्रति अत्यधिक लगाव व दृढ़ निष्ठा से जुड़ा हुआ है....

इसी शिविर में दूसरी चमत्कारी घटना यह बनी कि 'गीता भवन' धर्मशाला के निचले एक कमरे में चाय–खाना इत्यादि बनाने के लिए गैस व उसके साथ भरे गैस के तीन सिलेन्डर्स, सब्जियाँ, आटा, दूध वगैरह खाद्य पदार्थ रखे हुए थे। शिविर के दूसरे दिन ही शिविरार्थी सुबह का नाश्ता कर चुके थे कि करीब ढाई सौ हरिभक्तों के लिए खीर बनाने बड़ी गैस

पर पतीले में दूध चढ़ा हुआ था। इतने में ही गैस पाईप में से गैस लीक होने लगी और उसने थोड़ी आग पकड़ ली। उसी कमरे में बैठे तीन-चार सेवक एकदम बाहर निकल गए... चारों ओर शोर मच गया। ऊपरी मंजिल पर रुके सभी हरिभक्तों को कमरे खाली करके नीचे उतर आने को कहा गया, क्योंकि चार गैस के सिलेन्डर्स कभी भी फट कर दीवारों को तोड़ सकते थे। सभी हरिभक्त नीचे चौक में इकट्ठे हो गए। प.पू. काकाजी भी उसी बिल्डिंग के दूसरे हिस्से में पहली मंजिल पर विराजमान थे। पू. दीदी अचानक आई इस परिस्थिति से खूब घबरा कर प.पू. काकाजी के पास रोते-रोते पहुँची। प.पू. काकाजी तो सब जानते हुए भी स्थिर व एकदम प्रसन्नवदन बैठे थे। प.पू. काकाजी ने उसे दिलासा देते हुए कहा कि अरे ! क्यों रोती हो ? कुछ नहीं होगा। सब की रक्षा होगी। बापा हर प्रकार से संभालेंगे...

धर्मशाला के पास ही लाल रेती का ढेर पड़ा था। सो आठ-दस हरिभक्तों ने जल्दी-जल्दी उस रेती से तसले भर-भर कर आग बुझाने के लिए वो डालने शुरु करी, ताकि साथ में रखे सिलेन्डर्स आग पकड़ ना सकें। आश्चर्य यह हुआ कि आग एक बड़ी ज्योत की तरह ही जली और दीवार पर ही ज्योत की काली सी एक शेप बन गई। साथ में रखे सिलेन्डर्स एकदम सुरक्षित रहे। सब कुछ जल्दी ही शांत हो गया।

लाल रेती गिरने से खीर का दूध तो सारा खराब हो ही गया था। पर जब उस दूध को फेंकने पतीला खाली करने लगे, तो पतीले में नीचे से काली ज़हरीली मरी हुई छिपकली निकली। वो देख कर सब अवाक् रह गए। सभी को पक्की प्रतीति हुई कि प.पू. काकाजी द्वारा ही यह प्रसंग रचा गया है और हम सब की रक्षा हुई है। अगर गैस लीक होने से आग नहीं लगती, तो रेती का इस्तेमाल नहीं होता और वही खीर हम यदि खाते तो क्या हालत होती ?

'गीता भवन' में रहने वाले कार्यकर्ताओं से बाद में एक बात और पता चली कि पिछले दिन शाम को ही लाल रेती का टेम्पो लेकर कोई यहाँ आया था और... हम उसे खूब कहते रहे कि हमने यह रेता मंगाया ही नहीं है। तब भी वो टेम्पो वाला जिद्द करके जबरदस्ती रेता यहाँ खाली करके ही गया कि मुझे तो यहीं डालने के लिए कहा गया है। इन सब बातों से स्पष्ट ख्याल आया कि पन्द्रह दिन पहले ही प.पू. काकाजी ने अपने लेटर में जो लिखा था, उसका हमें अनुभव कराने ही ये घटनाएं बनी हैं।

* प.पू. काकाजी अपनी परावाणी में बोले कि–
  गुलज़ारीलाल नंदाजी को गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने जब आशीर्वाद दिए कि जाओ ! तुम प्राईम मिनिस्टर बनोगे, तो वहाँ बैठे सभी हंसने लगे। गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने पूछा कि आप सब क्यों हँस रहो हो ?
  सब सोचते थे कि नंदाजी तो लेबर यूनियन के सिर्फ प्रेसीडेन्ट हैं और कहाँ प्राईम मिनिस्टर का ओहदा ! गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज तो साक्षात् पुरुषोत्तमनारायण को अखंड धारे हुए राजाधिराज पुरुष !! सो, एकदम बोले कि हँसते क्या हो ? एक बार नहीं-दो बार भारत की गद्दी पर बैठेगें !
  इतिहास साक्षी है कि सत्संगीबंधु गुलज़ारीलाल नंदाजी अपने जीवनकाल में दो बार प्राईम मिनिस्टर की गद्दी पर बैठे !
* **आप लोग अब सजग हो जाइए।** इधर हमारे पास कुछ लेने के लिए आप आए हो। हमें आपको इतना देना है... इतना देना है। प्रेम से, उमंग से इतना देना है कि आप लेते-लेते थक जाओ। **अब समय मत बिगाड़ो... 'टाईम इझ मनी'**।
* प.पू. काकाजी धुन कराने के बाद ध्यान करते हुए अधिकतर संकल्प बुलवाते। आइए, उस संकल्प की स्मृति करके अपनी बैटरी चार्ज करें।
  'हे महाराज ! हे स्वामी ! हे चैतन्य स्वरूपों ! हे श्री कृष्ण भगवान ! हे योगीबापा ! हे पप्पाजी ! हे हरिप्रसादस्वामी ! हे संतमंडल ! मेरे सामने आया मुक्त ब्रह्म की मूर्ति माना जाए, अखंड दिव्य मनाया जाए, माथे का मुकुट मनाया जाए–ऐसा आपके बल से, आपकी कृपा से, आपके अनुग्रह से सहज ही दृढ़ कराना !
  अब इस संकल्प को प्राणवायु का उत्थान करके शक्ति दो। छाती में मस्तक तक पूरा श्वास भर के अटको, भावना करो – हे बापा ! हे स्वामी ! हे गुरुदेव ! मुकुंदजीवनस्वामी-गुरुजी ! मेरी इन्द्रियों-अंतःकरण को शुद्ध, पवित्र, शक्तिशाली बनाना। फिर धीरे-धीरे-धीरे अशुद्ध श्वास को पूरा निकाल कर खाली हो जाओ। तीन बार यही प्रक्रिया करो। तत्पश्चात् एक मिनिट के लिए स्वयं के प्राण का साक्षी बन कर, विचारों का मन में लय करके, मन का बुद्धि में लय और बुद्धि का प्राण में लय कर दो।'

* रात को हम तो सो जाते हैं, यानि– हमारी देह सो जाती है। पर, एक सर्वोपरि शक्ति–प्रभु हमारा श्वास धबक-धबक चलाते हैं। सारे विश्व का संचालन वो प्रभु करते है। पर, हम उसे पहचानते नहीं। वो तुम्हारे हृदय में ही छिपा है... वो तुम्हारे हृदय मंदिर में अखंड है। अब **उसे प्रगट कर लो।**
* **मैं आप सब का वकील बन कर, आपकी सारी गल्तियाँ माफ करके भगवान के पास आपका केस लड़ रहा हूँ !** उसकी कुछ फीझ भी मैं लेता नहीं हूँ। आओ-आओ ! **बस खाओ-पीओ-मजा करो-आनंद करो।**
  लेकिन, भगवान के साथ बनावट मत करो। खुल्ले दिल की सच्चाई से–मानसिक प्रमाणिकता से जीवन जीने का भीतर से–दिल की गहराई से मन, बुद्धि, चित्त, अहम्, अंतःकरण से पार जाकर चेतना में यह दृढ़ सकंल्प करना पड़ेगा।
* दस इन्द्रियाँ व ग्यारहवां मन टोटल पिरो कर, यानि– ग्यारहमुखी शंख से तीव्र पुकार करोगे तो भगवान सुनेंगे ही।
* मुझे बहुत खुशी होती है कि कलियुग के जमाने में आप सब भगवान का भजन-नामस्मरण करते हो। तो ये सतयुग हो गया ! इधर सतयुग है क्योंकि यहाँ भक्तों की सच्ची भावना है, सच्चा प्रेमभाव है। भावना को हाथ-पैर आते हैं, जड़बुद्धि को नहीं। हम सब इतने इकट्ठे होकर दृढ़ संकल्प करेंगे तो आपके हृदय में भी प्रकाश हो जाएगा।
* संतों की स्मृति करके, नामस्मरण करके–इस 'सहृदयी शिविर' को याद करके घर पर जाकर अब 15 मिनिट रोज भजन करने की प्रेक्टिस ही बना लेना।
  कोई युगल जोड़ी प्रेम में कैसी लय और लीन हो जाती है कि उनके कान भी किसी की आवाज सुनते नहीं हैं। वे इतने लय हो जाते हैं। उसी तरह हम भगवान व संत की स्मृति में कम से कम 15 मिनिट के भजन का समय तो निकालें ही।
* **अब नींद से जागो। एलर्ट हो जाओ।** भजन करते हुए नींद आए, आलस आए तो दो तीखी मिर्च खा लेना। पर, **अब कोरस्टली समय मत बिगाड़ो।**
* विदेश के लोगों की एक बहुत अच्छी विशेषता यह है कि वे लोग खूब सिन्सियर व प्रमाणिक हैं; जबकि हम हिन्दुस्तानी हर एक श्वास में झूठ बोलते हैं, बनावट करते हैं...
  लाखों जन्म से जड़ता रूप **ईर्ष्या–अहंकार** हमारे भीतर में जम चुके हैं। **प्रगट मिले संत हम में से वह निकालना चाहते हैं....** वो हम पर उनकी कृपा है।
  असल में तुम्हें सुख चाहिए ही नहीं–ना ही शांति चाहिए; तुम्हें मिज़रिज़ ही चाहिए। एक भ्रांत अवस्था में तुम सब जी रहे हो। मेरे गुरुदेव ने सारा मीकेनिझम तैयार करके दिया... आपको तो अब केवल एक बटन ही दबाना है, स्विच ही ऑन करना है।
* तुम्हें मेरी बात बहुत बुरी लगेगी... भले बुरी लगे, पर **सच्ची माँ बच्चे की भलाई के लिए कड़वी दवाई देगी।**
* स्वामिनारायण भगवान ने धरती पर आकर 'गिफ्ट लव'–अनोखे वरदान दे दिए... सूर्य जैसे कोई फर्क किए बिना ब्राह्मण व वेश्या – दोनों को मुफ्त में एक सरीखा प्रकाश देता है।
  अभी तक 40 हजार वर्ष के इतिहास में ऐसे वरदान किसी अवतार ने नहीं दिए। 200 साल पहले भगवान स्वामिनारायण मानव रूप में धरती पर आए... उसके हम वारिसदार हैं और हम सब वो पीढ़ी चला रहे हैं। **आत्यंतिक कल्याण की पीढ़ी के पप्पाजी, स्वामिजी, महंतजी, हरिप्रसादस्वामी... ये सब मैनेजर हैं।**
* हिन्दुस्तान में सभी को हर चीज मुफ्त में चाहिए। भगवान स्वामिनारायण ने स्वयं का 'अक्षरधाम' यानि– उसको अखंड धारे प्रगट गुणातीत संत मुफ्त में दिए। लेकिन हमें समझना पड़ेगा कि ये चीज क्या है ?
  आप मायिक हो और संत अमायिक हैं।
  आप लहरी हो, जबकि वो दरिया है।
  आप जड़ हो, वो चेतन है।
  आप मर्यादित हो, वे अमर्यादित हैं।
  गीता, उपनिषद्ों, भागवत्–सभी में ये बातें कही गई हैं। पर, **इन बातों को मूर्तिमान किया भगवान स्वामिनारायण ने** !
  हम सिर्फ कल्याण की नहीं, आत्यंतिक कल्याण की–आत्यंतिक मोक्ष की पीढ़ी चला रहे हैं। मरने के बाद नहीं, बल्कि– अभी **देह रहते हुए, जीतेजी भगवान के सुख के अधिकारी बनो।**
  'सहृदयी शिविर' समाप्त होने पर अपने भीतर में अपने साथ प्रभु का प्रकाश लेकर जाना।
* कोई हमें कुछ कहे– 'कुत्ता-गधा' कह कर हमें गालियाँ भी दे, पर तब भी संत की स्मृति में रह कर भजन करना।

विज्ञप्ति....

श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर से जुड़े सत्संगीबंधुओं की जानकारी हेतु –
मंदिर का फोन नंबर **2724 9327** अब मौजूद नहीं है। अब सिर्फ **2722 9327** एक ही फोन है।
इसके अतिरिक्त दो निम्न मोबाईल नंबर्स पर आप प.पू. गुरुजी से संपर्क कर सकते हैं।

9312247398 एवं 9810183381

निमंत्रण

3 फरवरी 2005, गुरुवार प्रातः 8 से 11 ***अशोकविहार 'ताड़देव' स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव*** *और* ***ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन मनायेंगे.....***
इस मंगलकारी अवसर पर सपरिवार इष्ट मित्रमण्डली सहित उपस्थित रहने का आपको हार्दिक निमंत्रण है।

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	21.1.2005,	शुक्रवार	– एकादशी, व्रत
(2)	दि.	23.1.2005,	रविवार	– ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का स्वधामगमन दिन
(3)	दि.	25.1.2005,	मंगलवार	– मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का दीक्षा दिन
(4)	दि.	26.1.2005,	बुधवार	– **प्रजासत्ताक दिन**
(5)	दि.	5.2.2005,	शनिवार	– एकादशी, व्रत-गुरुवर्य प.पू. योगीजी महाराज की स्वधामगमन तिथि
(6)	दि.	13.2.2005,	रविवार	– वसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती, ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री प.पू. शास्त्रीजी महाराज की जयंती
(7)	दि.	15.2.2005,	मंगलवार	– प्र.ब्र.स्व. प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की जन्मजयंती
(8)	दि.	19.2.2005,	शनिवार	– एकादशी, व्रत
(9)	दि.	7.3.2005,	सोमवार	– एकादशी, व्रत-प.पू. काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन
(10)	दि.	8.3.2005,	मंगलवार	– महाशिवरात्रि, व्रत
(11)	दि.	11.3.2005,	शुक्रवार	– प.पू. गुरुजी की जन्मजयंती तिथि
(12)	दि.	13.3.2005,	रविवार	– प.पू. गुरुजी की जन्मजयंती ***(27 मार्च, रविवार को ताड़देव-दिल्ली में मनाई जाएगी।)***
(13)	दि.	21.3.2005,	सोमवार	– एकादशी, व्रत
(14)	दि.	25.3.2005,	शुक्रवार	– होली, ब्रह्मस्वरूप प्रागजी भक्त का जन्मोत्सव
(15)	दि.	26.3.2005,	शनिवार	– धुलेन्डी, प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. साहेब की जन्मजयंती

R.N.I. 28971/ 77

Air Mail
'Bhagwatkripa' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2722 9327
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road, Daya Basti, Delhi

TO,